जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

ज्वालामुखी

जनवरी 1986

जापानी साहित्य विशेषांक

अंक छः

सम्पादक : योशिआकि सुजुकि

Scanned with CamScanner

जापानी लोगों द्वारा लिखित हिन्दी पत्रिका

ज्वालामुखी

अंक 6 : जनवरी 1986

सम्पादक
योशिआकि सुज़ुकि

डा. मिज़ोकामि साहब को
सादर भेंट
22.1.1986
तोक्यो
सुज़ुकि

सुज़ुकि

तोक्यो, जापान

Scanned with CamScanner

सम्पादक :

योशिआकि सुजुकि
YOSHIAKI SUZUKI

पता :

3-6-3-415, Kiba, Koto-ku
TOKYO-135, JAPAN

सहयोग राशि :

विदेश में 5 डालर (डाक व्यय सहित)

मुद्रक : रूपाभ प्रिंटर्स, 4/115 विश्वास नगर
शाहदरा, दिल्ली-110032 (भारत)

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

सम्पादकीय		5
जापानी साहित्य की प्रवृत्तियां (4)	शिगेओ आराकि	7
द्वितीय महायुद्धोत्तर जापानी साहित्य	हिदेहिसा हिरानो	12
और एक जापानी कवि : ताकुबोकु इशिकावा	योशिआकि सुजुकि	20
जापानी कविताएं		
रोज़	श्री आकितो सुगितानि	24
दर्द	सुश्री फुमिको इतागुचि	25
M भाई	श्री नोबुओ आयुकावा	26
बसंत के लिए	श्री माकोतो ओओओका	28
एक बाँसुरी वाला	सुश्री एरिको किशिदा	30
स्त्री	सुश्री रिन् इशिगाकि	32
सान्गात्सु दो (मार्च मंदिर)	श्री तारो कितामुरा	33
चिचिबु कोन्मिन्तो (चिचिबु जनवादी आन्दोलन)	श्री युताका आकितानि	35
जापानी पौराणिक कथा : आठ सिर-धारी साँप	साइजो माकिनो	37
परिशिष्ट		40

Scanned with CamScanner

भारतीय भोजन व संगीत की दुकान

आ सू न

भारतीय वातावरण में आपका स्वागत है

Open : Mon-Fri 16 : 00-01 : 00
Sat-Sun 14 : 00-01 : 00

Sunday रात 8 बजे से भारतीय संगीत सभा

26-2 Kitazawa 3-Chome, Setagaya-ku, TOKYO
Tel 03-465-7653

भारतीय भोजनालय

दान-रान

216-1 KICHIJOJI **honmachi**
Musashino-shi, TOKYO
Tel (0422) 22-5333

Scanned with CamScanner

सम्पादकीय

काफी अरसे से हमारी पत्रिका के पाठक मांग करते आए हैं कि इस पत्रिका के माध्यम से जापानी साहित्य का परिचय दिया जाए। इन पाठकों के अनुरोध पर यह जापानी साहित्य विशेषांक प्रस्तुत है। इस अंक में जापानी कथा-साहित्य से अवगत कराने के साथ-साथ पाठकों के लिए विशेष रूप से जापानी कविताओं का अनुवाद भी प्रस्तुत है। इस अंक में अनूदित कविताओं के कवि और कवयित्रियां सभी जापानी कविता-जगत में प्रसिद्ध हैं।

पाठकों के लिए यहां पर जापानी कविता के विषय में परिचयात्मक रूप से कुछ कहना उचित होगा। जापानी कविता-जगत में हाइकु-सेन्र्यू, तान्का और कविता अलग-अलग विधाएं मानी जाती हैं। अर्थात् 5. 7. 5 क्रम अक्षरों वाली लघु कविता हाइकु-सेन्र्यू की एक अलग दुनिया है। 5. 7. 5. 7. 7 क्रम अक्षरों वाली लघु कविता तान्का की भी अपनी अलग दुनिया है और आधुनिक कविता की एक अलग। हाइकु के रचनाकार को हाइजिन कहते हैं और तान्का रचने वालों को काजिन कहते हैं। कविता लिखने वालों को शिजिन अर्थात् हिन्दी के अर्थ में कवि कहेंगे। उपरोक्त हाइकु और तान्का जापान की परम्परागत लघु कविताएं हैं (इसके बारे में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के डॉ० सत्यभूषण वर्मा की हाइकु सम्बन्धी कृतियां देखें)। इन परम्परागत लघु कविताओं से अलग जापानी कविता का उद्भव यूरोपीय कविताओं के अनुवाद से हुआ। यूरोपीय कविताओं के प्रभाव से उसी तर्ज की कविता की रचना होने लगी और आज भी उसमें तरह-तरह के प्रयोग हो रहे हैं। इसलिए इतना तो मानना ही होगा कि कविता भारत में जितनी जनता के बीच में लोकप्रिय है उतनी जापान में नहीं। परन्तु यह कदापि नहीं समझा जाए कि जापानी साहित्य में कविता का स्थान गौण है। आज की जापानी आधुनिक कविता एक तरह के संक्रमण काल से गुजर रही है। एक समय में 'आधुनिक कविता' 'जीवन की कविता' नाम से जनता के बीच लोकप्रिय भी हुई थी पर आर्थिक विकास के साथ-साथ अर्थात् भौतिक समृद्धि प्राप्त होने के बाद कविता का जनता के बीच में इतना प्रसार नहीं हुआ कि जितना टी० वी० जैसे प्रसार माध्यम का। परन्तु इसका मतलब यह भी नहीं कि जापानी कवियों ने लिखना बन्द कर दिया। कवि जापानी भाषा की विशेषताओं का प्रयोग अपनी कविताओं में करते आए हैं। छन्द का प्रयोग, शब्द-क्रीड़ा का प्रयोग आदि भी होता आया है। जापान में कई विश्व स्तरीय कविताकार भी हैं जैसे सुश्री काजुको

Scanned with CamScanner

शिराइशि। पर न जाने क्यों जनता में उतने लोकप्रिय नहीं। लेकिन यह भी सही है कि कविता व्यक्तिगत अभिव्यक्ति है। इस दृष्टि से इस अंक में अनूदित जापानी कविताएं पाठकों को कैसी लगेंगी ? हम प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में हैं।

इस अंक के लेख विशेष रूप से 'ज्वालामुखी' के लिए लिखे गए हैं। श्री साइजि माकिनो द्वारा अनूदित कहानी को छोड़कर सभी लेखों और कविताओं का अनुवाद सम्पादक ने किया है। अनुवाद में अशुद्धियों का दोष सम्पादक पर होगा।

मकर संक्रांति
14-1-1986

सम्पादक

Scanned with CamScanner

जापानी साहित्य की प्रवृत्तियां (4)

□ शिगेओ आराकि

शुद्ध साहित्य और मनोरंजक साहित्य का समन्वय जापानी साहित्य-जगत में मध्य साहित्य कहलाता है। युद्ध काल में यह साहित्य बहुत लोकप्रिय हुआ। इस लोकप्रियता के पीछे जापानी समाज की आर्थिक परिस्थिति में सुधार का होना था। आर्थिक परिस्थिति के सुधार के साथ-साथ शहरों में सिनेमाघर, कैबरे, मदिरालय, कॉफी हाउस आदि बड़ी संख्या में खुलने लगे। जनता एक तरफ तो युद्ध का भय महसूस करती थी, दूसरी तरफ इन आमोद के स्थानों में आनन्द उठाती थी। इस समय तक जो कुछ लेखक राजनीति से सम्बन्धित साहित्य रचते थे वे भी मध्य साहित्य की लोकप्रियता देखकर इस रास्ते पर आ गए।

सन् 1930 के बाद साहित्य-जगत में आए कुछ लेखकों का परिचय नीचे दिया जाता है।

सर्वप्रथम फुमिओ निवा का नाम उल्लेखनीय होगा। निवा ने अपनी मां को अपनी कथाओं का पात्र बनाया और अपनी मां की युवा अवस्था के शारीरिक सौन्दर्य को कहानियों में चित्रित किया। सिर्फ सौन्दर्य का ही नहीं, बल्कि स्त्री-पुरुष के अनैतिक सम्बन्ध का कल्पनातीत चित्रण भी किया। लेखक निवा ने न तो अपने व्यक्तिगत विचार और नैतिकता को अपनी कहानियों में व्यक्त किया, और न समाज के प्रति कोई सामाजिक-राजनैतिक दिलचस्पी ही दिखाई। उन्होंने सिर्फ तटस्थता से स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध का विस्तार से चित्रण किया। इस युग में आदर्श, नैतिकता, मानवतावाद आदि का विचार लगभग शून्य हो गया था। अनैतिकता को चित्रित करने वाले निवा की रचनाओं को इस युग का प्रतीकात्मक साहित्य कहा जा सकता है। द्वितीय महायुद्ध के समय अनैतिक समझा जाने के कारण सत्ता द्वारा निवा के इस साहित्य को दबाया गया। तब वे स्त्री-पुरुष शारीरिक सम्बन्धी कहानियों को त्यागकर युद्ध समर्थक साहित्यकार बन गए और युद्ध समाप्त होने के बाद मध्यकाल के बौद्ध भिक्षु को पात्रों में रखकर धार्मिक उपन्यास लिखने लगे।

सेइइचि फुनाबाशि ने युद्ध से पहले मां-बेटी के मनोभाव और सम्बन्ध को कहानियों में चित्रित किया और युद्ध काल में उन्होंने शिल्पकारों, दुकानदारों आदि की जिन्दगी को कहानी में ढाला। द्वितीय महायुद्ध के बाद जब प्रेम-सम्बन्धी साहित्य व्यापक रूप से समाज में स्वीकार किया जाने लगा तब उन्होंने कहानियों में वस्तुपूजा (Fetishism) को लाकर सेक्स-सम्बन्धी साहित्य का सृजन किया। उनका साहित्य विशेष रूप से अनैतिक सेक्स-सम्बन्धी साहित्य कहलाता है।

ताइज़ो इशिकावा ने किसी भी विचार या वाद से दूर रहकर साधारण जनता की सामाजिक नैतिकता को अपनी कहानी का आधार माना और इस आधार पर उन्होंने तटस्थता से कहानियां लिखीं। युद्धपूर्व से

Scanned with CamScanner

लेकर आज तक आम जनता की दृष्टि से सामाजिक समस्याओं को चित्रित करने के कारण इशिकावा यथार्थ-वादी लेखक के रूप में लोकप्रिय हुए। योजिरो इशिज़ाका का नाम भी प्रसिद्ध है। युद्ध पूर्व से लेकर युद्धोत्तर काल के बाद भी इशिज़ाका युवा लोगों की जिन्दगी को चित्रित करते रहे। उनकी कहानियों में चित्रित पात्र मध्यवर्ग के नवयुवक हैं। उनकी कहानियों में गम्भीरता कम मनोरंजन अधिक है।

इन चार लेखकों के अलावा पारिवारिक सम्बन्धों को हास्य-विनोद में चित्रित करने वाले लेखक बुनरोकु शिशि तथा सामन्तवादी युग की पृष्ठभूमि में उस समय की जनता की जिन्दगी चित्रित करने वाले लेखक जिरो ओसारागि का नाम भी उल्लेखनीय है।

उपरोक्त साहित्यकारों का साहित्य अर्थात् मध्य साहित्य द्वितीय महायुद्ध से ही जनता के बीच में खूब लोकप्रिय हुआ। इसी कारण जापानी साहित्य की मुख्य धारा मध्य साहित्य कहलाती है। उस समय साहित्य रचना के मूल में अथवा मूल विचार में यह होता था कि लेखक यथार्थ देखते हुए भी जनता को खुश करने की कोशिश करे अर्थात् पुस्तक बेचने के लिए पाठकों को प्राप्त करने का प्रयास करे। इससे पहले साहित्य को समाज एवं जीवन के सत्य खोजने का एक साधन माना जाता था लेकिन यह विचार मजदूर साहित्य के पतन के साथ-साथ समाप्त हो गया। इसके स्थान पर उपरोक्त मध्य साहित्य अर्थात् व्यावसायिक साहित्य का उद्‌भव हुआ। परन्तु यहां यह बताना भी जरूरी होगा कि व्यावसायिक साहित्य के अलावा कला के लिए कला-वादी साहित्य कुछ हद तक जीवित था। इस वर्ग के लेखक द्वितीय महायुद्धपूर्व में मार्क्सवादी साहित्य से प्रभावित लोग थे। उन लोगों ने युद्ध के दौरान सत्ता द्वारा मार्क्सवादियों का दबाया जाना देखा था। मार्क्स-वादी आन्दोलन के पतन और सरकार के प्रति निराशापूर्ण अनुभवों से एक नया मार्क्सवादी लेखक उभरकर आया। उन मार्क्सवादी अर्थात् कला के लिए कलावादी लेखकों में कुछ इस प्रकार हैं।

जुन ताकामि। उन्होंने कहानी में ऐसे शिक्षित लोगों के मनोभावों को चित्रित किया जिनको सत्ता के दबाव में अपने विचार बदलने पर मजबूर होना पड़ता था परन्तु फिर भी वे सत्य को खोजने का प्रयत्न जारी रखते थे। युद्धकाल में ताकामि को सरकारी लेखक नियुक्त किया गया यानी ताकामि सत्ता के आलम्बन में थे यद्यपि ताकामि स्वयं मार्क्सवादी लेखक थे। अपनी कहानी के पात्र की तरह उन्हें भी अपना विचार बदलना पड़ा। सत्ता के आश्रय में होते हुए भी उन्होंने साहित्य की स्वतन्त्रता का एक अपना ही रास्ता खोजा। सत्ता साहित्य के प्रभाव से डरती है ऐसा जानते हुए भी ताकामि ने साहित्य को शक्तिहीन कहा और सत्ता के दबाव से बचते हुए साहित्य का सृजन करते रहे। युद्ध के बाद ताकामि ने परिवर्तनशील समाज के शिक्षित लोगों की दुर्बलता एवं शक्ति को उपन्यास में प्रस्तुत करते हुए मानो अपनी सारी जिन्दगी को ही सम्पूर्ण रूप से चित्रित करने का प्रयास किया। इतो ने James Joyce और M. Proust की साहित्यिक विधा को अपनाकर शिक्षित लोगों के मन में छिपे अपराध-भाव को नंगा करने का प्रयास किया। युद्धकाल में इतो ने जापानी समाज को व्यंग्यात्मक दृष्टि से अभिव्यक्त किया और युद्ध-समाप्ति पर उन्होंने युद्धकालीन शिक्षित लोगों के मनोभाव को चित्रित किया जो सत्ता के दबाव में जी रहे थे। इसके अलावा लेखक इतो ने आदमी का स्वार्थी स्वभाव और सेक्स के शून्यपन को भी अपनी कहानियों का मुख्य विषय बनाया।

लेखक जुन इशिकावा Andre Gide के साहित्य से प्रभावित थे। उन्होंने कठोर परिस्थिति में मनुष्य के मनोभाव के परिवर्तन का चित्रण हास्य के साथ प्रस्तुत किया। युद्धकाल में वे ऐतिहासिक उपन्यास और आलोचना लिख कर सत्ता के दबाव से बचते रहे। युद्ध के बाद उन्होंने तेजी से आने वाले सामाजिक परिवर्तन और अपरिवर्तनीय दर्शनशास्त्र के विषय पर उपन्यास लिखे।

Scanned with CamScanner

आन्गो साकागुचि भी जापान में लोकप्रिय हैं। वे सत्य की खोज का और संन्यासी जीवन व्यतीत करना चाहते थे। परन्तु न चाहते हुए भी कभी-कभी वे विकृत जिन्दगी व्यतीत करते थे। संन्यासी जीवन और विकृत जीवन के अनुभवों को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया। उन्होंने युद्धकाल में सैनिकों के मृत्यु-बोध को अपने साहित्य का विषय बनाया। युद्ध के बाद नैतिकता को ध्वस्त कर पुनर्निर्माण के रास्ते को जापान के पुनरुत्थान का रास्ता माना। साकागुचि ने स्त्री-पुरुष शारीरिक सम्बन्धों को अधिक चित्रित किया, इसी कारण वे विध्वंसवादी साहित्य के प्रमुख लेखक के रूप में जाने जाते हैं।

ओसामु दाज़ाइ भी आन्गो साकागुचि की तरह के विध्वंसवादी साहित्यकार हैं। वे जमींदार परिवार में जन्मे और युवावस्था में वामपंथी आन्दोलन में शामिल हो गए, पर इस आन्दोलन के बीच में ही अलग हो जाने के कारण उनके मन में गहरी चोट लगी। इस मानसिक चोट ने बार-बार उनको आत्महत्या करने के लिए प्रेरित किया। ओसामु दाज़ाइ ने इस तरह का ध्वस्त-सा जीवन व्यतीत करते हुए मानव की दुर्बलता और परम सौन्दर्य को साहित्य में खोजा। और सचमुच ही दाज़ाइ ने अंत में आत्महत्या करके दुनिया से विदा ली।

इस संक्रमण काल में मध्य साहित्य जापानी साहित्य की प्रमुख धारा थी। पर साथ ही उपरोक्त विध्वंसवादी लेखकों का साहित्य-सृजन भी होता रहा था। विध्वंसवादी लेखक केवल सब कुछ नष्ट कर अनैतिकता का समर्थन नहीं करते थे। अनैतिकता को चित्रित करते हुए पाठकों के सामने सवाल रखते हैं कि सही नैतिकता क्या है? इसको जापानी साहित्य में कलात्मक विद्रोह कहा जाता है। जैसे पिछले अंक में कहा गया है कि जापान में मजदूर साहित्य आन्दोलन लगभग समाप्त हो गया है। इस आन्दोलन से प्रभावित साहित्यकारों ने इस संक्रमण काल में उल्लेखनीय रचनाएं लिखीं।

काफू नागाइ ने 'बोकुतो किदान' (सन् 1937) में सैनिकवादी नैतिकता का विरोध करने वाली वेश्या की जिन्दगी चित्रित की।

जुन्इचिरो तानिज़ाकि ने परम्परागत जापानी परिवेश की पृष्ठभूमि में अपने विशिष्ट सौन्दर्य-संसार की रचना की। उनका साहित्य तानिज़ाकि साहित्य कहलाता है।

शूसेइ तोकुदा ने अपने आपको तटस्थता से देखकर कहानियां लिखीं और तोसोन शिमाज़ाकि ने 10 साल लगाकर 'योआके माए' ('सुबह से पहले', सन् 1935) नाम का उपन्यास लिखा। इसमें मेइजि युग (सन् 1867 से 1912 तक) के गांव का चित्रण है जहां आधुनिकीकरण के कारण परिवर्तन हो रहे हैं। उस कृति ने उन्हें जनवादी साहित्यकार के रूप में ख्याति प्रदान की।

कोजि उनो ने कलाकार के आदर्शवादी जीवन और वास्तविक जीवन के अन्तर और उसकी व्यग्रता को कहानी में चित्रित किया।

नाओया शिगा ललित निबन्धकार के रूप में प्रसिद्ध हैं, उन्होंने कहानियां, निबन्ध आदि लिखे हैं। उनका साहित्य उच्च शिक्षित लोगों में लोकप्रिय हुआ।

यूज़ो यामामोतो की कहानियां भी साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि की थीं फिर भी भाषा सरल होने के कारण उनकी कहानियों ने जनता को बहुत प्रभावित किया। सरकार की दृष्टि में यूज़ो यामामोतो युद्ध-विरोधी और प्रगतिशील लेखक थे। इस संदेह में सरकार ने कभी-कभी उनकी कहानियों को जब्त भी कर दिया था। उपरोक्त लेखक युद्धकाल से लेकर युद्ध के बाद भी अपनी साहित्यिक स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुए कहानियां लिखते रहे।

Scanned with CamScanner

□

अंत में द्वितीय महायुद्धकालीन जापानी समाज के बारे में कुछ लिखना चाहता हूं।

जापानी साम्राज्यवादी सरकार ने सन् 1931 में चीन पर हमला किया और सन् 1941 में अमेरिका पर। इन दस सालों में जापान में सैनिक शासन पूरे तौर पर स्थापित हो चुका था और सैनिक शासन ने जापानी जनता की जिन्दगी को भी अपने नियंत्रण में कर रखा था। विशेष तौर पर चीन पर आक्रमण का उद्देश्य चीन को अपने नियंत्रण में रख कर उसकी सम्पदा को लूटना और एशियाई देशों पर अपना नियंत्रण बनाना था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए जापानी सैनिक-शासन ने जनता की विचारधारा, नीति आदि को अपने नियंत्रण में रखकर युद्ध विरोधी तत्त्वों को दबा डाला था। यह नियंत्रण सिर्फ विचार-धारा या नीति का ही नहीं था बल्कि शासन ने जनता की दैनिक उपभोग की वस्तुएं भी अपने नियंत्रण में कर ली थीं।

सन् 1940 में साम्राज्यवादी सैनिक सरकार ने सूचना मन्त्रालय की स्थापना की और इस मंत्रालय द्वारा वामपंथी, व्यक्तिवादी, स्वतंत्रतावादी तत्त्वों को गिरफ्तार किया गया। सरकार ने जापानी जनता पर देश-भक्त बनने का दबाव डाला। जनता के लिए जरूरी था कि वह सम्राट का सम्मान और युद्ध का समर्थन करे। केवल सरकार का निर्णय ही सब कुछ था। सरकारी नीति का विरोध करने वाले को देशद्रोही माना गया। अधिकांश जनता सरकार की नीतियों का विरोध नहीं कर सकती थी। न चाहते हुए भी सबको कट्टर राष्ट्रवाद का समर्थन करना पड़ा। मगर जनता की जिन्दगी की कठिनाइयों में कोई सुधार नहीं हुआ। ऐसे समय में जो लेखक जनता की जिन्दगी का यथार्थपूर्ण चित्रण करते थे वे सैनिकवादी सरकार की नजर में देश-द्रोही थे। सूचना मंत्रालय ने काफू नागाइ, शिगेहारू नाकानो आदि के लिखने पर रोक लगा दी और दूसरी ओर तोकुदा की यथार्थवादी कहानियों, जुन्इचिरो तानिज़ाकि की कहानियों को अखबार, पत्रिकाओं में प्रकाशित करने पर प्रतिबंध लगा दिया। सरकार ने असंख्य साहित्यकारों को जबरदस्ती सेना में भरती करवा दिया और युद्ध प्रेरक कहानियां लिखवाने के लिए विदेश के युद्ध-मैदानों में भेज दिया। उधर जापान में रह रहे लेखकों पर भी देशभक्ति साहित्य लिखने का दबाव डाला गया। चीन-जापान युद्ध के दौरान जापान में लेखक, कलाकार, बुद्धिजीवियों में से कुछ युद्ध के विरोधी थे परन्तु जैसे ही जापान-अमेरिका युद्ध शुरू हुआ, तब लगभग सभी जापानी देशभक्त और राष्ट्रवादी बन गए। क्योंकि सभी जापानी लोगों के मन में भय मौजूद था कि युद्ध में पराजित हो जाने का मतलब होगा जापानी जाति का इस दुनिया से मिट जाना। इसलिए युद्ध के प्रति सहमति या असहमति के विचार से भी ऊपर देश और जाति पर आए संकट ने सभी जापानियों को देशभक्त बना दिया। पहले जापानी सरकार ने ब्रितानी एवं अमरीकी औपनिवेशिक शासन से एशियाई देशों को बचाने का आह्वान किया और बाद में जापानी सरकार ने खुद ही एशियाई देशों को अपने अधीन रखने की कोशिश की, साथ ही जापानी सत्ता ब्रिटेन और अमेरिका के प्रति हीन भावना से ग्रस्त थी। इस हीन भावना और असंतोष को हटाने के लिए जापानी सत्ता ने अमेरिका से युद्ध छेड़ दिया। जापानी सत्ता ने जापानी जनता को सिर्फ यह दिखाया कि ब्रिटेन और अमेरिका पर विजय प्राप्त करना ही युद्ध का उद्देश्य है। जापानी औपनिवेशिक शासन-नीति को जनता से छिपाया गया, इस कारण इस युद्ध के प्रति आपत्ति उठाने वाले बहुत कम थे।

जापान-अमेरिका युद्ध के वक्त जब सत्ता ने सभी लेखकों से युद्ध समर्थक बनने का आग्रह किया, इसके पहले से ही राष्ट्रवादी लेखक देशभक्ति साहित्य का सृजन कर रहे थे लेकिन उन लेखकों के राष्ट्रवादी विचार सैनिक शासन के राष्ट्रवादी विचार से कुछ भिन्न थे। उन लोगों ने शुद्ध देशभक्ति और राष्ट्रवादिता पर

Scanned with CamScanner

विचार किया। उनके विचार में शुद्ध देश-भक्ति उपनिवेशवादी शासन की देशभक्ति की परिभाषा से भिन्न थी। इसलिए वे देशभक्त होते हुए भी साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी शासन के खिलाफ थे।

इसके विपरीत जो पहले युद्धविरोधी लेखन करते थे सत्ता के दमन के बाद सत्ता के आदेश के अनुसार युद्ध-समर्थक साहित्य लिखने लगे। यह जापानी साहित्यकार की कमजोरी कही जा सकती है। युद्ध विरोधी लेखक के लिए युद्धकाल में अपनी कहानियां छपवाने का कोई साधन नहीं था। जापान अमेरिका से पराजित हो रहा था और जापान आर्थिक संकट की स्थिति में भी था। उपभोग की वस्तुओं की देश भर में कमी थी। जनता को खाने-पीने की चीजें खरीदने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ती थी।—साहित्यकार भी इसका अपवाद नहीं था। उन्हें भी आम जनता की तरह अपनी सम्पत्ति बेचकर खाने-पीने की चीजें खरीदनी पड़ीं। जापान में अमरीकी आक्रमण होने से बच्चे शरण लेने गांव की ओर जाने लगे। युद्ध का शिकार हमेशा जनता ही बनता है। असंख्य लोग युद्ध के शिकार हुए। युद्ध की समाप्ति की खबर मानो मृत्यु के चंगुल से निकलने की खबर थी। सबको एक बड़ी राहत का अहसास हुआ। युद्ध-समाप्ति पर जापान का क्या होगा अथवा देश के भविष्य के बारे में सोचने तक का मन नहीं था। दूसरे महायुद्ध में हुई पराजय के तुरन्त बाद विजेता अमेरिका ने जापान का शासन अपने नियंत्रण में ले लिया और जनतंत्र की स्थापना के लिए अमरीकी सैनिक शासन ने संविधान, दंड संहिता, नागरिक कानून आदि बना दिए। यह कानून जापानी लोगों को बिना विरोध स्वीकार करने ही पड़े। लोकतंत्र क्या है? क्या युद्ध में जीतने वाले का शासन ही लोकतंत्र है? यह सब सोचने का मन इस समय की जापानी जनता के पास नहीं था। जापानी सरकार के पराजित होने पर ही लोकतंत्र जापान में अपनाया गया। बिना क्रांति के, बिना जनता के संघर्ष के। यह शायद लोगों के द्वारा खुद हासिल किया हुआ लोकतंत्र नहीं है।

युद्ध समाप्त होने पर लेखक काफू नागाइ, सुएकिचि आओनो, जुन् ताकामि आदि ने युद्धकालीन अपनी व्यक्तिगत डायरियां प्रकाशित कीं। ये डायरियां युद्ध पीड़ित जापानी साहित्यकारों के युद्धकालीन अप्रकाशित विचारों के दस्तावेज हैं।

Scanned with CamScanner

द्वितीय महायुद्धोत्तर जापानी साहित्य

□ हिदेहिसा हिरानो

सन् 1868 के मेइजि युग से प्रारम्भ हुए जापानी आधुनिकीकरण का सबसे बड़ा परिणाम सन् 1945 में द्वितीय महायुद्ध की पराजय थी।

जब जापान पहली बार युद्ध में हारा तो इस पराजय ने सत्ता ही नहीं बल्कि जापान की आम जनता को भी निराशा की अंधेरी में डाल दिया और उसे युद्ध के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने को मजबूर कर दिया। जापान के शहर मलबे का ढेर हो गए थे और जनता के मन में सूनापन फैल रहा था। परन्तु युद्ध की पराजय के बाद साहित्य जगत में एक नयी आवाज पैदा हुई अर्थात् एक नई पीढ़ी का जन्म हुआ। उन लोगों की आवाज स्पष्ट और गम्भीर थी। उन लोगों ने युद्धकालीन अनुभवों को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाया। सन् 1946 में हिरोशि नोमा ने 'कुराइ ए' ('अंधेरा चित्र') प्रकाशित करके लोगों को झकझोर दिया। इसमें जापान-चीन युद्ध के प्रारम्भ के एक दिन पहले का चित्रण है। उस समय विश्वविद्यालय में कुछ छात्र साम्यवादी और युद्ध-विरोधी आन्दोलन छेड़ रहे थे। उस आन्दोलन में भाग लेने वाले छात्रों की भावनाओं को लेखक नोमा ने विदेशी चित्रकार ब्रुगेर के उदास और अंधकारमय चित्र को पृष्ठभूमि में रखकर चित्रित किया। यह उपन्यास पाठकों से प्रश्न करता है कि जब विद्रोह का परिणाम निश्चित रूप से मृत्यु है फिर भी नवयुवकों को क्रान्तिकारी आन्दोलन क्यों छेड़ना पड़ता है। ब्रुगेर के 'अंधेरा चित्र' को देखकर लेखक को नवयुवकों के अंधकारमय भविष्य का स्मरण हो आता है। इस कहानी में भावनाओं का और सामाजिक चेतना का भरपूर चित्रण है। उस समय जापान में इस प्रकार का कथा साहित्य पहली बार पाठकों के सामने पेश किया गया था। यह उपन्यास खास तौर पर विश्वविद्यालय के छात्रों में लोकप्रिय हुआ। इसके बाद नोमा ने सैन्य शिविर द्वारा शिक्षाप्राप्त सैनिकों और अनपढ़ सैनिकों के आपसी सम्बन्धों को 'शिनकू चिताइ' ('शून्य क्षेत्र' सन् 1952) में दर्शाया। जापान में इस कहानी ने उस समय विवाद खड़ा किया कि क्या सैन्य शिविर समाज से कटा हुआ 'शून्य क्षेत्र' है या नहीं। इसके बाद लेखक नोमा ने सन् 1947 में शुरू कर लगभग 20 साल लगा कर एक लम्बा उपन्यास लिखा। यह उपन्यास 'अंधेरा चित्र' का दूसरा भाग कहलाया जाने वाला उपन्यास है। उसका नाम 'सेइनेन नो वा' ('युवा वर्ग की शृंखला') है। इसमें नगरपालिका में काम करने वाले नायक की सम्पूर्ण जिन्दगी चित्रित है। दमनकालीन समय में नायक की विचारधारा युद्ध-विरोधी और क्रांतिकारी थी। नायक की दिलचस्पी जापान की अछूत जाति की समस्या में भी थी, वह बुराकु (जापानी अछूत वर्ग) मुक्ति-आंदोलन का कार्यकर्ता था। उस नायक की जिन्दगी के माध्यम से लेखक नोमा ने नवयुवक के मनोभावों

Scanned with CamScanner

को और व्यवहार को अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास केवल काल्पनिक नहीं, लेखक नोमा स्वयं बुराकु मुक्ति-आन्दोलन के समर्थक हैं। इसलिए इस उपन्यास का चित्रण यथार्थपूर्ण है। इस उपन्यास पर नोमा को लोटस पुरस्कार मिला। वे आज भी सक्रिय रूप से समाज सेवा और लेखन करते हैं। जहां एक ओर हिरोशि नोमा मध्य निम्नवर्गीय शिक्षित एवं जागृत लेखकों की दृष्टि से साहित्य सृजन करते हैं, तो दूसरी ओर रिनजो शिइना (सन् 1911-1973) 'शिन्या नो शुएन' ('रात का मदिरा भोज', सन् 1947) में निम्न वर्ग के लोगों की जिन्दगी अस्तित्ववादी दृष्टि से चित्रित करते हैं। लेखक शिइना ने शुरू से अंत तक जनता के अंतर्द्वन्द्व को अपने साहित्य का विषय बनाया है। सन् 1951 में उन्होंने बौद्ध धर्म छोड़कर ईसाई धर्म अपनाया। उनकी कहानियों में 'च्योएकिनिन नो कोकुहाकु' ('अपराधी का वक्तव्य', सन् 1969) भी प्रसिद्ध है।

लेखक तोशिओ शिमाओ (जन्म सन् 1917) ने भी बौद्ध धर्म से ईसाई धर्म में धर्म-परिवर्तन किया। द्वितीय महायुद्ध में शिमाओ नौ-सेना के जहाज में कप्तान थे। उनके नीचे दो सौ जवान थे। उनका जहाज एक बार आक्रमण के लिए रवाना होना है और जवानों को अन्तिम सांस तक युद्ध करने का आदेश होता है। यद्यपि जापानी पराजय के केवल दो दिन पहले ही शिमाओ को रवाना होने का आदेश मिला परन्तु उन्होंने जवानों को रवाना होने का आदेश नहीं दिया। अर्थात् युद्ध के दौरान उन्होंने मृत्यु के निकट तक जाने का अनुभव किया। उन्होंने अपने इस अनुभव के आधार पर मृत्यु के सामने सैनिकों की मनःस्थिति को कहानी 'शुप्पात्सु वा त्सुइनि ओकोनावारे जु' ('आखिर रवाना नहीं हुआ', सन् 1962) में चित्रित किया। शिमाओ की साहित्यिक शुरुआत अति यथार्थवादी कहानी 'युमेनो नाका नो निचिजो' ('सपने में दैनिक जीवन', सन् 1948) से हुई। इसके बाद पागल पति और उसकी पत्नी के बीच सम्बन्ध पर 'शिनो इबारा' (मृत्यु का कंटीला पौधा', सन् 1962) प्रकाशित हुई। इससे साहित्य जगत में उन्हें मानव के अस्तित्व की खोज करने वाले लेखक के रूप में समझा गया। देखने में उनकी कहानियां शुद्ध जापानी व्यक्तिगत साहित्य की परम्परा में हैं पर शिमाओ की पत्नी दक्षिण द्वीप की हैं जिससे उनका विवाह युद्धकालीन समय के संकट में हुआ। इसलिए आज के शांति के जमाने में भी लेखक के मन में युद्ध की छाया हमेशा बनी हुई है और इस भावना को लेखक अपनी कहानियों में अभिव्यक्त करते हैं।

यहां और एक लेखक का परिचय आवश्यक है। उनका नाम है कोबो आबे। हिरोशि नोमा, रिन्जो शिइना, तोशिओ शिमाओ ने द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होने से पहले अथवा युद्धकाल में साहित्य जगत में प्रवेश किया था पर कोबो आबे जापानी पराजय के समय हाई स्कूल का छात्र था। जापानी पराजय को कोबो आबे ने चीन में देखा था और सिर्फ पराजय ही नहीं बल्कि जापानी साम्राज्य शासन की अराजकता, अनैतिकता को भी उन्होंने देखा। उस समय के अनुभवों को कोबो आबे ने 'ओवारिशि मिचि नो शिरुबेनि' ('खत्म होने के रास्ता का नोटिस', सन् 1948) में चित्रित किया। लेकिन यह परम्परागत जापानी साहित्य से अलग और कठिन कहानी थी, इसलिए इतनी लोकप्रिय नहीं हुई। उसके बाद उन्होंने 'काबे' ('दीवार', सन् 1951) लिख कर सही तौर पर साहित्य में यश प्राप्त किया। यह अपना नाम, कार्ड पर लिखा अपना नाम और अपने अस्तित्व की दरार पर आधारित कहानी है। 'सुनानो आन्ना' ('बालू की स्त्री', सन् 1962) कोबो आबे की सबसे प्रसिद्ध रचना है। आलसी दैनिक जीवन से भागने के लिए नायक एक गांव पहुँच जाता है जो खाई के भीतर बालू से घिरा हुआ है। इस गाँव की स्त्री नायक को पकड़ लेती है। चारों ओर बालू की दीवार से घिरे हुए घर की छत से भी बालू गिरता रहता है। नायक से कमरे में गिरे बालू को बाहर फेंकने का काम करवाया जाता है। एक दिन वह इस गांव से भागने की कोशिश करता है पर खाई की बालू की दीवार पार करने में असफल रहता है। नायक का दैनिक जीवन सिर्फ खाना खाना, सोना और बालू फेंकना ही है। आलसी जीवन

Scanned with CamScanner

से मुक्त होने के लिए इस गाँव में फंसा नायक सोचने लगा कि इस गाँव का दैनिक जीवन शहर के जीवन से अधिक आलसी दैनिक जीवन है। इस उपन्यास में चित्रित बालू का गाँव सामंती युग का प्रतीक प्रतीत होता है।

यह उपन्यास द्वितीय महायुद्धोत्तरीय साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण रचना कही जाती है।

हरुओ उमेज़ाकि (सन् 1915-1965) ने अपने युद्धकालीन अनुभवों को जापानी परम्परागत भावना 'मुज्यो कान्' जो अस्थायित्व भाव अनिश्चित भाव और त्याग की भावना से मिश्रित भावना है, द्वारा अभिव्यक्त किया। उनकी कहानियों में 'साकुरा जिमा' ('साकुरा द्वीप', सन् 1946) 'गेनका' ('माया', सन् 1965) प्रमुख हैं। 'साकुराजिमा' में उन्होंने युद्ध में भेजे गए सैनिक के अनुभवों और साकुरा जिमा में कैम्प के अनुभव को चित्रित किया।

शोहेइ ओओओका (जन्म सन् 1919) युद्धपूर्व काल में फ्रांसीसी साहित्य के विद्वान थे। युद्ध के बाद उन्होंने युद्ध के अनुभवों को लिखकर साहित्य जगत में प्रवेश किया। उन्होंने 'नोबि' ('जंगल की आग', सन् 1948) 'फुर्योकि' ('कैदी की डायरी', सन् 1948) में अपने फिलीपीन युद्ध के अनुभवों को अभिव्यक्त किया। युद्ध की पराजय के बाद अपनी जान बचाने के लिए भागते हुए और जीवित रहने के लिए मरे हुए आदमी का मांस खाने तक का विचार लेखक ने किया था। ओओओका ने सोचा हो कि शायद यह भगवान द्वारा परीक्षा है। कठिन परिस्थिति में मानवता की परीक्षा लेने का विचार जापानी साहित्य में कम था। उन्होंने उपरोक्त अनुभव पर आधारित दो कहानियां रचने के बाद प्रेम सम्बन्धी कहानी 'मुसाशिनो फुजिन' ('मुसाशिनो क्षेत्र की श्रीमती जी', सन् 1950) प्रकाशित करके काफी लोकप्रियता हासिल की, पर युद्ध के अनुभवों से मुक्त न होकर उन्होंने युद्ध के अनुभवों को ही विस्तार से चित्रित करने वाला उपन्यास 'रेइते सेन्कि' ('रेइते युद्ध की डायरी', सन् 1967 से 1969) लिखा।

ताइजुन ताकेदा (सन 1912-1976) चीनी साहित्य से पहले से परिचित थे। युद्धपूर्व उन्होंने चीन की ऐतिहासिक कथा 'शिकि नो सेकाइ' ('चीनी इतिहास की दुनिया', सन् 1942) प्रकाशित की। मंदिर के पुजारी के परिवार में जन्मे ताइजुन ताकेदा को चीन से लगाव था पर युद्धकाल में उन्हें एक सैनिक के तौर पर चीनी जनता से युद्ध करना पड़ा। यह दुःख अभी भी उनके मन में गहरा है। ताकेदा ने इस अनुभव से निष्कर्ष निकाला कि मानव का जीवन अंतर्द्वन्द्व से भरा है। 'शिन्पान' ('निर्णय', सन् 1947) 'फूबाइका' ('An anemophilous Flower', सन् 1953) आदि से पता चलता है कि अपने साहित्यिक विचार में वह हमेशा चीन के प्रति अपराध-बोध से पीड़ित हैं।

उपरोक्त लेखकों से नयी पीढ़ी में युकिओ मिशिमा (सन् 1925-1970) का नाम आता है। युवावस्था में मिशिमा ने युद्ध का अनुभव किया, तब उनके विचार में मृत्यु-बोध का विचार उभरा। उनके विचार में युद्ध ही मृत्यु का प्रतीक थी। जापानी सम्राट के लिए जान देना जापानी लोगों के जीवन का परम उद्देश्य समझा जाता था। इस विचार के माध्यम से मिशिमा ने सौन्दर्य की खोज की और सौन्दर्य दृष्टि और सम्राट-प्रथा के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का विचार किया। मिशिमा के लिए युद्धोत्तर काल माया की दुनिया थी। समाज तेज गति से बदल रहा था सम्राट जापान का सिर्फ प्रतीक ही माना गया। सेना का अस्तित्व सम्राट के लिए न होकर देश की आत्मरक्षा के लिए माना गया। कोई भी सैनिक सम्राट के लिए लड़ने को तैयार नहीं थे। इस जापानी सामाजिक परिस्थिति से उदास होकर सन् 1970 में मिशिमा ने आत्मरक्षा सेना के सैनिकों से सम्राट के सैनिक बन जाने का आह्वान किया और इस आह्वान के विफल होने पर मिशिमा ने आत्महत्या कर ली। जिस दिन मिशिमा ने अपने पेट को काटकर (हाराकिरि) आत्महत्या की उसी दिन उन्होंने पुनर्जन्म से संबंधित

Scanned with CamScanner

लम्बा उपन्यास 'होज्यो नो उमि' ('समृद्ध समुद्र', सन् 1969-1970) पूरा किया था। युकिओ मिशिमा के समकालीन एक ग्रुप है जिसका नाम 'मचिने पोएटिक' है। इस ग्रुप के लेखकों में शिन्इचिरो नाकामुरा (जन्म सन् 1918) शूइचि कातो (जन्म सन् 1919) ताकेहिको फुकुनागा (सन् 1918-1979) के नाम उल्लेखनीय हैं। इन लेखकों की फ्रांसीसी साहित्य या यूरोपीय साहित्य में गहरी रुचि हैं और इन साहित्यों से प्रभावित होकर जापानी साहित्य पर इनका प्रभाव डालने की कोशिश करते हैं परन्तु इन लोगों के प्रयास का अब तक ठीक से मूल्यांकन नहीं हुआ है।

युद्धोत्तर संक्रमण काल में लेखकों में विचारों का आदान-प्रदान बहुत हुआ। इस आदान-प्रदान में नया जापानी साहित्य संघ और पत्रिका 'किन्दाइ बुन्गाकु' ('आधुनिक साहित्य') की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। नया जापानी साहित्य संघ के सदस्यों में से शिगेहारु नाकानो, युरिको मियामोतो, युइतो कुराहारा प्रमुख थे। वे युद्धपूर्व के मजदूर साहित्य आन्दोलन से जुड़े लोग थे। इधर 'किन्दाइ बुन्गाकु' के लोग भी कुछ हद तक मजदूर साहित्य आन्दोलन से सम्बन्धित थे। इस ग्रुप के लोगों में युताका हानिया (जन्म सन् 1910), केन् हिरानो (सन् 1907-से 1978) किइचि सासाकि (जन्म सन् 1914) प्रमुख हैं। उपरोक्त ग्रुपों के भीतर मजदूर साहित्य आन्दोलन का पतन, मूल्यांकन और आधुनिकता को लेकर काफी तेज वाद-विवाद हुआ। दोनों ग्रुपों से सम्बन्धित अपनी आलोचनात्मक दुनिया बनाने वालों में कियोतेरु हानादा (सन् 1909-1974) हैं। उन्होंने आलोचना ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक उपन्यासों को रच कर अपनी विशेष साहित्यिक दुनिया का निर्माण किया।

□

द्वितीय महायुद्ध की पराजय के बाद युद्धकाल में जिनसे लिखने का अवसर छीन लिया गया था उन लेखकों ने फिर से लिखना शुरू कर दिया। काफू नागाइ (सन् 1879-1959), नाओया शिगा (सन् 1883-1971), हारुओ सातो (सन् 1892-1964) जुनइचिरो तानिज़ाकि (सन् 1886-1965) यासुनारि कावाबाता (सन् 1899-1972) आदि। इन लेखकों में जापानी परम्परागत साहित्य अपनाने वाले जुन्इचिरो तानिज़ाकि और यासुनारि कावाबाता को छोड़कर बाकी लेखकों का साहित्यिक कार्य लगभग ठप हो गया। क्योंकि उन लेखकों की अभिव्यक्ति पुरानी हो गई थी और ये लेखक नये युग के सामाजिक यथार्थ को ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पाते थे। इन लेखकों में बचे यासुनारि कावाबाता ने भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने के चार साल बाद आत्महत्या कर ली। उपरोक्त लेखक युद्धपूर्व से युद्ध के दौरान काफी प्रसिद्ध थे। इन लेखकों के आलावा युद्धोत्तर के संक्रमण काल में जो लेखक लोकप्रिय हुए उनके नाम हैं, आन्गो साकागुचि, जुन इशिकावा, ओसामु दाज़ाइ, साकुनोसुके ओदा। (इन लेखकों को विध्वंसक लेखक अथवा अनैतिकतावादी लेखक कहते हैं। इन लेखकों के बारे में श्री आराकि का लेख देखें। सम्पादक)

□

द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व अमेरिकी पूंजीवाद समर्थक देशों और रूसी साम्यवाद समर्थक देशों में बांटा गया। अमेरिका-रूस शीत युद्ध यूरोप में पूर्व-पश्चिम जर्मन के मामले को लेकर और एशिया में उत्तर-दक्षिण कोरिया के मामले को लेकर उत्तेजित हो गया। आखिर सन् 1950 के जून में शीत-युद्ध गर्म-युद्ध में बदल गया यानि कोरिया युद्ध प्रारम्भ हुआ। पड़ोसी देश कोरिया के युद्ध ने जापान को घबरा दिया कि जापान फिरयुद्ध में फंसने वाला है। इस वातावरण में अखबार संवाददाता योशिए होत्ता (जन्म सन् 1918) ने इस परिस्थिति के संकट को अपने मन की आन्तरिक भावना के साथ 'हिरोबा नो कोदोकु' ('मैदान का अकेलापन',

Scanned with CamScanner

सन् 1951) में चित्रित किया । इसके बाद जब नई दिल्ली में प्रथम एशियाई अफ्रीकी लेखक संघ का महा-अधिवेशन हुआ तब होत्ता ने जापानी एशियाई अफ्रीकी लेखक संघ के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। इस अधिवेशन के दौरान अनुभव की गई बातों को होत्ता ने 'इन्दो दे कान्गाएता कोतो' ('भारत में किया विचार' सन् 1957) में अभिव्यक्त किया। दीर्घकाल से योशिए होत्ता एशियाई-अफ्रीकी लेखक संघ के कार्य में सक्रिय भूमिका निभाते आ रहे हैं। आजकल वे यूरोप खासकर स्पेन में रहकर कलाकार 'गोया' की कलात्मक आलोचना के अध्ययन में लगे हैं।

साहित्य-आलोचक, इतली साहित्य के अनुवादक मिन्पेइ सुगिउरा (जन्म सन् 1913) भी कोरिया युद्ध को लेकर चिंतित थे और साम्यवादी दल के सदस्य बन गए। इधर योशिए होत्ता अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जनतंत्र स्थापित करने का कार्य करते थे, उधर सुगिउरा गांव की नेतागिरी व्यवस्था को तोड़कर गांव में जनतन्त्र स्थापित करना चाहते थे। सुगिउरा ने गांव की सामाजिक समस्याओं और अमेरिकी सेना कैम्प की समस्याओं को लेकर रिपोर्ताज़ लिखे जिनमें 'नोरिसोदा सोदोकि' ('नोरिसोदा दंगा डायरी' सन् 1952)और 'किचि 605 गो' ('कैम्प नम्बर 605', सन् 1953) प्रमुख हैं। साहित्यिक रचनाओं में 'शोसेत्सु वातानाबे काज़ान' ('उपन्यास वातानाबे काज़ान') उनका प्रतिनिधि उपन्यास है। इसमें उन्होंने एदो युग के प्रगतिशील विचारक एवं कलाकार वातानाबे काज़ान की विपत्तिपूर्ण जिन्दगी को ऐतिहासिक सचाई के साथ चित्रित किया।

मजदूर साहित्य आन्दोलन से जुड़े हुए शिगेहारु नाकानो ने जापानी साम्यवादी दल के विभाजन की गड़बड़ के वक्त भी साहित्य की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। पहले पार्टी से जुड़े हुए साहित्य को ही साम्य वादी मजदूर साहित्य माना जाता था। नाकानो ने साहित्य की स्वतंत्रता पर बल देकर पार्टी के मैनिफेस्तो से भी स्वतन्त्र होने को कहा। नाकानो ने सन् 1954 में उपन्यास 'मुरागिमो', सन् 1957 से 58 में 'नाशिनो हाना' ('नाशपाती का फूल') उपन्यास लिखे और इसके बाद आत्मकथात्मक उपन्यास 'उतानो वाकारे' ('कविता से विदा') लिखा। साम्यवादी दल से निष्कासित होने के बाद नाकानो ने उपन्यास 'को० ओत्सु० हेइ० तेइ०' ('मार्कशीट : फर्स्ट क्लास, सेकण्ड क्लास, थर्ड क्लास और फेल', सन् 1965 से 69) लिख दिया। इसमें जापानी क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति क्रांतिकारी आलोचना चित्रित की है।

जापानी साम्यवादी दल के आन्तरिक संघर्ष और विभाजन की गड़बड़ को लेकर मित्सुहारु इनोउए (जन्म सन् 1926) ने 'काकारेज़ारु इश्शो' ('एक अलिखित अध्याय', सन् 1950) लिखा। इनोउए ने युवा अवस्था में कोयला खान में काम किया था जहां पर जापान में बसे कोरियाई लोगों का दमन और पीड़ित लोगों का दमन उन्होंने देखा था और उसका अनुभव भी किया था। इनोउए ने 'चिनो मुरे' ('भूमि की भीड़' सन् 1963) में परमाणु बम के प्रभाव से पीड़ित लोग और जापानी अछूत समस्या से पीड़ित लोगों के परस्पर विरोधों को चित्रित किया। वे निम्न वर्ग के लोगों के अन्तर्द्वन्द्व की उपेक्षा नहीं करते। वे पत्रिका 'हेनक्यो' ('अंचल') प्रकाशित करते हुए निम्न वर्ग के लोगों पर नजर डालते हैं।

□

सन् 1953 में कोरिया युद्ध रुक गया। उस कोरिया युद्ध के दौरान जापान में आर्थिक उन्नति हुई। जापान में अमेरिकी सेना कैम्प थे, पड़ोसी देश कोरिया में युद्ध के कारण लाखों अमेरिकी सैनिक जापान में आए और उन लोगों की खपत के लिए तथा युद्ध-सम्बन्धी वस्तुएं बनाने और बेचने के कारण आर्थिक उन्नति हुई। आर्थिक स्तर द्वितीय महायुद्धपूर्व स्तर से ऊंचा हो गया अर्थात् आर्थिक विकास हुआ। इस वक्त साहित्य जगत में और नए लोग आए। शोतारो यासुओका (जन्म सन् 1920) शूसाकु एन्दो (जन्म सन् 1923)

Scanned with CamScanner

जुन्नोसुके योशियुकि (जन्म सन् 1929) नोबुओ कोजिमा (जन्म सन् 1917) जुन्जो शोनो (जन्म 1921) आदि जिन्हें 'तीसरा नया लेखक' के नाम से जाना जाता है। समाज की स्थिरता को प्रतिबिम्बित करते हुए इन नये लेखकों ने रोजमर्रा की मानव सम्बन्धी कहानियां लिखीं।

इस समय पाठकों की रुचि भी बदल गई। पाठकों को इन नये लेखकों की कहानियां पसन्द आईं। इसके बाद इन लेखकों ने तरह-तरह के साहित्यिक प्रयोग करके साहित्यिक विकास में योगदान दिया। अभी भी उन लेखकों को जापानी साहित्य में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यद्यपि इन लेखकों को नयी पीढ़ी के लेखक कहा जाता है फिर भी इन लेखकों की रचनाओं में कुछ-न-कुछ द्वितीय महायुद्ध का प्रभाव दिखाई देता है। साहित्यिक दृष्टि से युद्ध के प्रभाव से बिल्कुल कटी रचना शिनतारो इशिहारा (जन्म सन् 1932) की 'ताइयो नो किसेत्सु' ('सूर्य की ऋतु', सन् 1955) है। इसमें अमीर वर्ग के नवयुवक का छात्र-जीवन चित्रित है और इस कहानी में कहीं भी युद्ध की गंध नहीं है। साहित्य जगत में अमीर वर्ग के इशिहारा का आविर्भाव मध्यवर्ग के लेखकों के चौंकाने के लिए काफी था। इशिहारा को देखकर 'हिनो उत्सुवा' ('दुःख का बर्तन', सन् 1962) के लेखक कात्सुकि ताकाहाशि (सन् 1931-1971) ने कहा कि उनका आविर्भाव ऐसा है मानो गम्भीर चेहरा लिए चिन्तन में लगे युवक के पीछे से कोई नये युग का युवक रफ्तार से तेज आवाज करते हुए मोटर साइकिल दौड़ाकर चले गये और हम उसे शून्यपन से देखते ही रहे। इशिहारा साहित्य रचने के साथ-साथ अब संसद सदस्य भी हैं, वे रुढ़िवादी लोकतन्त्र दल के सदस्य हैं। कहा जा सकता है कि इशिहारा का विचार युद्ध के बाद का ही बना है। इशिहारा अन्य लेखकों से राजनैतिक और साहित्यिक दृष्टि से भी भिन्न हैं। इशिहारा युद्ध से अप्रभावित रूप में साहित्य जगत में आए पहले लेखक थे। इसके बाद इशिहारा के तरह के कई लेखक साहित्य जगत में आए। उदाहरण के लिए केन् काइको का 'पनिक' ('आतंक', सन् 1957), केनजाबुरो ओओए का 'शिशा नो ओगोरि' ('मृतक का विलास', सन् 1957) आदि। केन् काइको (जन्म सन् 1930) ओसाका के लोगों की विशिष्टओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया करते है। उनका 'निप्पोन सान्मोन ओपेरा' ('तीन टके का जापानी स्वांग', सन् 1959) में शस्त्र कारखाने से चोरी करने वाला चित्रण है। यह कहानी युद्धोत्तर प्रतिधिधि कहानियों में से एक गिनी जाती है। उनके 'काको तो मिराइ नो कुनिगुनि' ('भूतकाल और भविष्य के देश', सन् 1961) में यूरोप और एशियाई देशों पर तुलनात्मक दृष्टि डाली गई है। बाद में काइको ने वियतनाम युद्ध के अनुभवों के आधार पर 'बेतोनाम सेन्कि' ('वियतनाम युद्ध की डायरी', सन् 1965) 'कागायाकेरु यामि' ('चमकता अंधेरा' सन् 1968) लिखे। इन दो उपन्यासों में उन्होंने इस युद्ध के अन्तर्विरोध को चित्रित किया। केन् काइको की तरह वियतनाम युद्ध विरोधी लेखकों की श्रेणी में माकोतो ओदा (जन्म सन् 1932) का नाम भी प्रसिद्ध है। वे भी ओसाका में जन्मे। उन्हें अमेरिकी संस्थान की छात्र-वृत्ति लेकर अमेरिका के विश्वविद्यालय में अध्ययन करने का अनुभव था। अमेरिका प्रवास का अनुभव और वापसी में यूरोप और भारत होते हुए लौटने के अनुभव को 'नानदेमो मिते यारो' ('सब कुछ देख लेंगे', सन् 1961) में अभिव्यक्त किया। इस पुस्तक को आश्चर्यजनक लोकप्रियता मिली। एक मध्य निम्न वर्ग के नव-युवक का विदेश-प्रवास का अनुभव एकदम ताजा था। उनका दृष्टिकोण एकदम अलग था जो आयातित नहीं था। खासतौर पर उन्होंने अमेरिका में और भारत में जो जातिगत समस्याओं को देखा उन्हें वे कभी भूल नहीं पाए। ओदा आज भी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय हैं और साथ-ही-साथ साहित्यिक सृजन भी करते हैं। उनके सामाजिक कार्य के रूप में बे० हे० रेन (वियतनाम शान्ति अभियान ! नागरिक संयुक्त संगठन) आन्दोलन प्रसिद्ध है। ओदा अमेरिका द्वारा वियतनाम पर आक्रमण के सख्त विरोधी थे। साहित्यकार के रूप में वे आधुनिक समाज में मानव को समग्र रूप में पकड़ने का प्रयास करते हैं। उनकी ऐसी रचनाओं में 'गा तो'

Scanned with CamScanner

('गा द्वीय', सन् 1973) 'मारुइ हिप्पी' ('गोल हिप्पी', सन् 1977) प्रमुख है।

केनज़ाबुरो ओए (जन्म सन् 1935) का साहित्यिक प्रवेश राजधानी से दूर स्थित शहरों के विद्वान के रूप में हुआ। ओए ने 'हिरोशिमा नोतो' ('हिरोशिमा नोट', सन् 1965) 'ओकिनावा नोतो' ('ओकिनावा नोट' सन् 1970) में क्रमशः परमाणु बम से पीड़ित लोगों की और ओकिनावा में औपनिवेशिक शासन की समस्या को चित्रित करते हुए मानव के अस्तित्व के सवाल को उठाया। इसके बाद ओए ने उपन्यास 'दोजिदाइ गेमु' ('समकालीन खेल', सन् 1979) में आधुनिक लोककथा के पुनर्जन्म का प्रयास किया। आयु की दृष्टि से हालांकि शिचिरो फुकाज़ावा (जन्म सन् 1914) काफी बुजुर्ग है उन्होंने 'नारायामा बुशिको' ('नारायामा नाम की लोककथा पर आधारित कहानी', सन् 1957) लिखकर साहित्य से प्रवेश किया। यहां परिचय कराए गए सभी लेखक उच्च शिक्षित हैं मगर अकेले फुकाजावा ही ऐसे लेखक हैं जो मात्र जूनियर हाईस्कूल पास हैं। उपरोक्त रचना प्रकाशित होने तक वे थियेटर में बैंड के सदस्य थे। उपरोक्त कहानी यद्यपि लोक-कथा पर आधारित है फिर भी जापान की अर्थ-व्यवस्था जो पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था और लघु उद्योग व्यवस्था का मिश्रण है, के बीच दरारों के कारण पैदा हुई विसंगतियों और जिन्दगी की कठिनाइयों का चित्रण है। इसके बाद फुकाज़ावा ने 'फुएफुकिगावा' ('फुएफुकि नदी', सन् 1958) लिखा जिसमें शासक और शासित लोगों के बीच परस्पर संघर्ष का चित्रण है और जापानी सम्राट पद्धति पर भी रोशनी डाली। 'फूर्यू मुतान' ('सपनों की कहानी', सन् 1960) में जब फुकाज़ावा ने सम्राट परिवार को सजा देने की कहानी लिखी तब दक्षिण पंथी सम्राट भक्तों ने फुकाज़ावा की जान लेने की कोशिश की। इसी कारण फुकाज़ावा को कुछ समय भूमिगत होना पड़ा। इस घटना से लगता है कि अभी भी जापान में अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं है और साथ ही सम्रट पर लिखना अवरोधनीय समझा जाता है।

□

सन् 1960 में जापान में अमेरिका-जापान सुरक्षा संधि को जारी रखने को लेकर सत्ता और विपक्षी दलों के बीच गर्मागर्म बहस हुई। विश्वविद्यालय बन्द हो गए शिक्षकों, रेल मजदूरों द्वारा हड़तालें की गईं। 10 साल बाद फिर इस संधि को लेकर और वियतनाम युद्ध के विरोध में छात्र आन्दोलन, मजदूर हड़ताल आदि हुईं। आर्थिक दृष्टि से तो जापान विकसित होता रहा और जापान ने पूंजीवादी देशों में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

भौतिक समृद्धि ने लोगों को भौतिकतावादी बना दिया। आज हर घर में टी० वी० है। लोग टी० वी० अधिक देखते हैं और पुस्तकें बहुत कम पढ़ने लगे हैं। नई पीढ़ी की रुचि साहित्य से ज्यादा कार्टून कामिक्स में है। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच की दरार भी एक सामाजिक समस्या है। ऐसी सामाजिक परिस्थिति में वर्तमान के जापानी साहित्य की रूपरेखा खींच पाना कठिन है। इस प्रकार की स्थिति में केन् हिरानो ने सन् 1961 में 'शुद्ध साहित्य परिवर्तन सिद्धान्त' लिखा और किइचि सासाकि ने सन् 1962 में कहा था कि युद्ध के समय का साहित्य एक माया था। साहित्य जगत में हिरानो के लेख और सासाकि के वक्तव्य की काफी चर्चा हुई। इस पृष्ठभूमि में आज के साहित्य को युद्धकालीन साहित्यिक सिद्धांतों द्वारा नहीं बांधा जा सकता। शुद्ध साहित्य की परम्परा से जुड़े हुए लेखकों में आज भी युकिचि फुरुइ (जन्म सन् 1937) आकिओ गोतो (जन्म सन् 1936) सेन्जि कुरोइ (जन्म सन् 1932) कुनिओ ओगावा (जन्म सन् 1927) का नाम आता है। उन लेखकों को 'अंतर्मुखी पीढ़ी' कहते हैं। परन्तु ये अधिकांश लेखक अपवाद हैं। आजकल प्रतिदिन असंख्य कहानियां प्रकाशित की जा रही हैं। इन कहानियों में प्रमुख धारा मनोरंजक जासूसी कहानी

Scanned with CamScanner

की धारा है। मनोरंजक जासूसी कहानीकारों में जिरो आकागावा (जन्म सन् 1948) का नाम प्रसिद्ध है। उनकी कहानियां लाखों में बिकती हैं। केवल शुद्ध साहित्य को ही महत्त्व देकर मनोरंजक साहित्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इधर शुद्ध साहित्य कमजोर पड़ता जा रहा है और उधर मनोरंजक साहित्य एवं मध्य साहित्य पाठकों की पसन्द पर उन्नति करता जा रहा है। हालांकि मनोरंजक साहित्य एकरस ही है फिर भी उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह व्यावहारिकता होगी। जासूसी कहानी के साथ-साथ सामाजिक जासूसी कहानी लिखने वाले लेखक भी मौजूद हैं। सेइचो मात्सुमोतो (जन्म सन् 1909) महज जासूसी कहानी नहीं लिखते बल्कि भ्रष्टाचार, सामाजिक घटनाओं को लेकर गम्भीर जासूसी कहानियां लिखते हैं। उनकी कहानियों में चित्रित घटनाएं सभी वास्तविक हैं। मात्सुमोतो सिर्फ सामाजिक घटनाओं पर ही जासूसी कहानियां नहीं लिखते, बल्कि प्राचीन जापान के इतिहास पर भी प्रकाश डालते हैं। उनका विशिष्ट ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी बहुत से लोगों को प्रभावित करता है।

उपरोक्त लेखकों के अलावा हिरोयुकि इत्सुकि, आकियुकि नोसाका, हिसाशि इनोउए के नाम भी लोकप्रिय हैं।

हिरोयुकि इत्सुकि (जन्म सन् 1932) ने 'सेइशुन नो मोन' ('युवा अवस्था का दरवाजा', सन् 1972-80), 'साराबा मोसुकुवा गुरेन्ताइ' ('नमस्कार, मास्को के गुंडों', सन् 1966) आदि में आज के युग के नवयुवकों की प्रतिविरोधी प्रवृत्ति को अभिव्यक्त किया।

आकियुकि नोसाका (जन्म सन् 1930) अपने आप को युद्ध के बाद के मलबे का लेखक कहते हैं। उन्होंने 'होतारू नो हाका' (सन् 1966) में युद्ध समाप्ति के बाद के जीवन के अनुभवों को चित्रित किया। वे भी इशिहारा की तरह संसद सदस्य बने पर विपक्षी दल के। इसके बाद भूतपूर्व प्रधानमन्त्री तानाका के विरुद्ध तानाका के निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव में खड़े हुए। नोसाका राजनीति में भी सक्रिय हैं।

हिसाशि इनोउए (जन्म सन् 1934) ने अपने गरीब छात्र जीवन को हास्य-विनोद के साथ चित्रित करना शुरू किया। उनका व्यंग्यात्मक उपन्यास 'किरिकिरि जिन' ('किरिकिरि नाम के क्षेत्र के लोग', सन् 1981) काफी लोकप्रिय हुआ। इस उपन्यास में एक गांव के जापान से स्वतन्त्र होने की बात कही गई है। आज के हास्य-विनोद लेखकों में इनोउए सबसे प्रसिद्ध हैं। वे केवल हास्य-विनोद की कहानियां ही नहीं बल्कि नाटक भी लिखते हैं।

सातवें दशक के लेखकों में से अगर कोई नाम लेना हो तो, केन्जि नाकागामि का नाम लेना ही होगा। केन्जि नाकागामि (जन्म सन् 1946) जापानी कथा साहित्य को आधुनिक पुनर्जागरण कराने का प्रयास करते हैं और नाकागामि का ध्यान केवल जापानी समाज पर ही नहीं बल्कि कोरिया आदि एशियाई देशों के जनजीवन में भी उनकी गहरी रुचि रखते हैं। और आधुनिकता से अप्रदूषित एशियाई देशों की जनता में मानव के मूल स्वरूप देखने का प्रयास करते हैं। उनके उपन्यासों में 'मिसाकि' ('अंतरीप', सन् 1975) 'कारेकिनादा' ('कारेकि समुद्र', सन् 1977) और 'सेननेन नो युराकु' ('हजार साल का भोग', सन् 1981) प्रमुख हैं।

Scanned with CamScanner

और एक जापानी कवि : ताकुबोकु इशिकावा

□ योशिआकि सुजुकि

सन् 1982 में बिहार के कवि श्री जितेन्द्र राठौर व जापानी महिला सुश्री कियो कुरु ने जापानी कवि केन्जि मियाज़ावा की कविताओं का हिन्दी में अनुवाद कर कविता संग्रह 'वसंत और यायावर' नाम से प्रकाशित किया। उन लोगों के प्रयास से हिन्दी प्रदेश में जापानी कवि केन्जि मियाज़ावा का परिचय हुआ। वास्तव में केन्जि मियाज़ावा की कविताएं एवं कहानियां अभी भी जापान में लोकप्रिय हैं। जब जापानी लोग केन्जि मियाज़ावा की कविताओं का स्मरण करते हैं तब स्वतः और एक अन्य कवि ताकुबोकु इशिकावा का नाम भी स्मरण हो आता है। ये दोनों लोकप्रिय कवि जापान के पूर्वोत्तरी क्षेत्र के इवाते प्रांत से संबद्ध थे। संयोग से इस लेख का लेखक भी इवाते प्रांत में ही जन्मा, इसी कारण दोनों कवियों की कविताओं से बचपन से ही परिचित है। इस लेख का उद्देश्य ताकुबोकु इशिकावा का एक जापानी लोकप्रिय कवि के रूप में संक्षिप्त परिचय देना है।

ताकुबोकु इशिकावा सन् 1886 में इवाते प्रांत के एक गांव में जन्मे और केवल 27 वर्ष की अल्प आयु में ही गरीबी और बीमारी के कारण स्वर्गवासी हो गए। वे केवल कविता ही नहीं लिखते थे, बल्कि आलोचना और तान्का यानी जापानी परम्परागत लघु कविता भी लिखते थे। उनके लिखे तान्का उनकी कविताओं से अधिक लोकप्रिय हुए पर इसके बावजूद भी उन्हें काजिन् की संज्ञा से संबोधित नहीं किया जाता है। (तान्का रचने वाले कवि को काजिन् की संज्ञा दी जाती है।) वरन आम तौर पर उन्हें कवि की संज्ञा से ही संबोधित किया जाता है, क्योंकि उन्होंने एक पंक्ति में अभिव्यक्त करने की तान्का लघु कविता की परम्परा को 3 पंक्तियों में विभाजित करके उसे एक नया स्वरूप प्रदान किया। इतना ही नहीं, तान्का की अलंकार रीति से भी मुक्त होकर इसमें अपने रोजमर्रा के जीवन को व्यक्तिगत भावुकता से भरे स्वर में अभिव्यक्त किया। उनके तान्का संग्रह 'इचिआकु नो सुना' ('एक मुट्ठी रेत', सन् 1910), 'कानाशिकि गान्गु' ('दुःखमय क्रीड़ा', सन् 1912) हैं और कविता संग्रह 'आकोगारे' ('अभिलाषा', सन् 1905) भी है।

ताकुबोकु के तान्का इतने लोकप्रिय हैं कि कोई भी जापानी एक बार तो जरूर ही उनके तान्का पढ़ेगा, लेकिन तान्का की दुनिया में उनके तान्का हमेशा चर्चा का विषय ही बने रहे। क्योंकि तान्का के आलोचक स्पष्ट व्यक्त करते हैं कि उनका 3 पंक्तियों वाला तान्का तान्का की रीति से अलग एक दूसरी चीज है। वे सिर्फ अपने रोजमर्रा के जीवन को कुल 31 अक्षरी 3 पंक्तियों में अभिव्यक्त करते हैं। तान्का एक साहित्यिक विधा है जिसमें तान्त्रा के सिद्धान्त के आधार पर रस होना चाहिए। तान्का की रचना तो मनुष्य ही करता

Scanned with CamScanner

है पर रचने के बाद तान्का स्वयं कवि यानी काजिन से मुक्त हो कर स्वतंत्र हो जाता है। पर ताकुबोकु के तान्का अतिव्यक्तिगत मनोभाव की अभिव्यक्ति है आदि-आदि। इसके बावजूद भी ताकुबोकु के तान्का अभी भी जनता में लोकप्रिय हैं। उनके तान्का की लोकप्रियता की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अब तक ताकुबोकु के तान्का पर दो सौ से अधिक लेख, आलोचनाएं आदि लिखी गई हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि ताकुबोकु जापान के एक प्रख्यात कवि हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया कि ताकुबोकु रोजमर्रा के जीवन को तान्का में अभिव्यक्त करते थे, इस दृष्टि से जानकारी हेतु ताकुबोकु का संक्षिप्त जीवन का परिचय देना उचित होगा।

सन् 1886 में जन्मे ताकुबोकु इशिकावा को बचपन से ही तान्का कविता आदि लिखने का शौक था। भारत के नवयुवकों की तरह ताकुबोकु भी कविताएं लिख कर पत्रिका अथवा अखबार में छपवाने हेतु भेजा करते थे और वे छपी भी। 17 वर्ष की आयु में पढ़ाई छोड़कर पूर्वोत्तरी क्षेत्र के इवाते प्रांत से राजधानी तोक्यो आए। उन्हें कवि बनने से पहले अपना पेट भरने के लिए नौकरी की जरूरत थी पर नौकरी न मिलने के कारण कुछ महीनों बाद ही उन्हें वापस अपने गांव लौटना पड़ा। फिर कुछ महीनों बाद अपनी कविता-संग्रह छपवाने के लिए वे पुनः तोक्यो आए। इस तोक्यो प्रवास के दौरान उनके पिता को जो मंदिर में पुजारी थे, काम से निकाल दिया गया। अचानक ताकुबोकु परिवार गरीबी के संकट में घिर गया। नौकरी की तलाश में ताकुबोकु ने कभी जापान के उत्तरीय द्वीप होक्काइदो में काम किया, तो कभी तोक्यो में और कभी अपने गांव में। उनका काम गांव में अध्यापक का, तोक्यो और होक्काइदो में अखबार के साहित्य विभाग में। गरीबी ने उनका पीछा न छोड़ा और इस गरीबी के कारण घर पर हमेशा झगड़ा ही होता रहता था। इस वातावरण ने ताकुबोकु को तान्का या कविता रचने पर मजबूर किया। यह वातावारण ताकुबोकु के लिए दुःखमय था, इसलिए ताकुबोकु कहा करते थे कि तान्का मेरी दुःखमय जीवन की क्रीड़ा है। घर की समस्याओं को भुलाने के लिए उन्होंने होक्काइदो द्वीप में काम करते समय की यादों को, अपने गांव की यादों को भावुकता भरे स्वर में अभिव्यक्त किया और तान्का रचते-रचते 27 वर्ष की अल्प आयु में ही गरीबी और बीमारी से भरी अपनी जीवन यात्रा समाप्त की।

ताकुबोकु के साहित्यिक विचार

कुछ लोग मानते थे कि साहित्यकार विशिष्ट प्रबुद्ध व्यक्तित्व होता है पर ताकुबोकु का विचार था कि साहित्यकार भी साधारण मनुष्य ही है जो दूसरे आम लोगों से भिन्न नहीं हैं। अपने आप को कवि मानने वाला सच्चा कवि नहीं हो सकता। कवि होने से पहले मनुष्य होना जरूरी है। मनुष्य की नजर से देख कर मनुष्य की कविता लिखना ही कवि का कर्तव्य है। और जीवन की व्यस्तता के बावजूद भी चाहे क्षण भर के लिए क्यों न हो, उभरती भावना को प्यार करने का मन जब तक रहेगा तब तक तान्का अमर रहेगा। इस प्रकार के विचार से प्रेरित भावुकता भरे तान्का सरल भाषा में ताकुबोकु ने लिखे।

उनके तान्का और कविताओं का कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

Scanned with CamScanner

[कविता]

हवाई जहाज

देख, आज भी
इस नीले आकाश पर
जहाज की ऊँची उड़ान को

बहुत दिनों बाद
नौकरी में आज छुट्टी का दिन
तपेदिक से बीमार माँ के साथ
घर पर ही अकेले
अंग्रेजी का पाठ पढ़ते
लड़के की आँखों में थकावट···

देख, आज भी
इस नीले आकाश पर
जहाज की ऊँची उड़ान को

नोट : जापान में हवाई जहाज की प्रथम उड़ान सन् 1911 अप्रैल में हुई। यह कविता इसके दो महीने बाद लिखी गई। इस वक्त तक ताकुबोकु ने हवाई जहाज नहीं देखा। देखें, ताकुबोकु की कल्पना-शक्ति

[तान्का]

जैसा भी हो
यादों का शिवुतामि गाँव
यादों का पहाड़
यादों की नदी

गांव से धकिया दिए जाने की
वह दुःखद घटना
कैसे भूलूं

Scanned with CamScanner

न जाने क्यों·
दिमाग में अंधी घाटी बनी
दिन-पर-दिन मिट्टी दरकने की आवाज

मेहनत करता हूँ
दमतोड़ मगर जीवन का सुख नहीं
देखता हूँ अपने हाथों को गौर से

यह वर्ष (सन् 1986) ताकुबोकु का जन्म शताब्दी वर्ष है। इस अवसर पर इवाते प्रांत में ताकुबोकु सम्मेलन का आयोजन भी होने जा रहा है।

Scanned with CamScanner

रोज़

□ श्री आकितो सुगितानि

सुबह से आलू के बीज बो रहा हूँ।
महज
समाजवाद के लिए
विश्व शांति के लिए
संघर्ष करना
कितना एकाकी जीवन होगा।
बीबी, बच्चे
और फिर अचानक एक दिन
हरे अंकुर फूटता छोटा-सा खेत
आदमी के जीवन की सोद्देश्यता के लिए
यही काफी है।

699-4, Santanda, Hanagashima-cho, Miyazaki-shi, Miyazaki-ken

Scanned with CamScanner

दर्द

□ सुश्री फुमिको इतागुचि

दर्द होता है
ऊपर की दाढ़ में पीछे कहीं
पर पता नहीं चलता कि
पीड़ा किस दाँत में है
पर वह दाँत
सचमुच शिकायत करता है
चिल्लाता है।
दो साल
दर्द के बाद
एक दिन पता लगता है कि
वह दाँत नहीं रहा।
शिकायत करते-करते लुप्त हो गया
चिल्लाते-चिल्लाते लुप्त हो गया
वह दाँत।
क्या सभी जीव जन्मते हैं।
केवल दर्द का अनुभव करने को ?

* सुश्री इतागुचि बीमारी के कारण 40 साल से बिस्तर पर पड़ी हैं।
Mifukuro, Soja-shi, Okayama-ken, JAPAN-719 13

Scanned with CamScanner

M भाई

□ श्री नोबुओ आयुकावा

यानि
जब कोहरे के भीतर से
या सीढ़ियों पर पैरों की आहट में से
वसीयत लिए वकील की आकृति उभरती है।
—यहीं से सब शुरू होता है।

दूर वह कल···
जब हम
मदिरालय के अँधेरे में कुर्सी पर
उदास बिगड़े चेहरे लिए
चिट्ठी के लिफाफे को उलट देते थे
'क्या सच है कि अब न कोई छाया है, न रूप ?'
—क्योंकि मैं मरने से बच गया।
समझा !
यही सच है।
M भाई
कल का नीला ठंडा आकाश
हमेशा के लिए उस्तरे की धार में बचा हुआ है।
पर मुझे याद नहीं
कब और कहाँ मैंने
तुम्हें खो दिया
—हमारा वह छोटा-सा स्वर्ण युग
शब्दों की उलट-पलट, भगवान-भगवान के खेल
हम खेला करते थे

Scanned with CamScanner

तुमने कहा था
'यही हमारे इलाज का पुराना नुसखा था'

मौसम हमेशा पतझड़ का ही होता
कल भी और आज भी
'अकेलेपन में सूखा पत्ता गिरता है।'
वह आवाज भीड़ को, शहर को पार कर
काले सीसे की सड़क पर
चलती चली आ रही थी

दफन के दिन
कोई शब्द भी न थे
लोग भी न थे
क्रोध, दुःख, असंतोष की गद्देदार कुर्सियाँ भी न थीं
आकाश की ओर ताकते हुए
तुम
बस भारी जूतों में पैर घुसा कर
शांति से लेट गए
'अलविदा !
यह सूर्य और समुद्र भी विश्वास के लिए काफी नहीं'
M भाई
जमीन के नीचे सोए M भाई
तुम्हारी छाती का जख्म
क्या अभी भी दुखता है ?

4-38-16, Tamagawa, Setagaya-ku, TOKYO

Scanned with CamScanner

बसंत के लिए

□ श्री माकोतो ओओओका

समुद्र के तट पर बालू में
सोए हुए बसंत को खोद कर
तुम उससे बाल सजाती
तुम हँसती
लहरों की भँवर
जैसी फैलती तुम्हारी हँसी
लहरों की फेन की तरह ही
आकाश में मिट जाती
समुद्र चुपचाप
हरे रंग की किरणों को
गर्म कर देता है

अपने हाथों को मेरे हाथों में
अपने फेंके हुए पत्थरों को
मेरे आकाश में
देखो !
आज के आकाश में
तैरती बहते फूलों की छायाएँ
हमारी बाँहों में उगता अंकुर
हमारी नजरों के बीच
बौछारें फेंकता घूमता
सोने का सूरज
हम झील हैं वृक्ष हैं
हम घुंघराली लटें हैं

Scanned with CamScanner

तुम्हारी बालों की
किरणों में झिलमिलाती

ताजी हवा दरवाजा खोलती
हरी छाया को
और हमें
पुकारते असंख्य हाथ
भूमि की परत पर
चमकती सड़क
झील में
तुम्हारी बाँहें झिलमिलातीं
और हमारी पलकों के नीचे
सूरज सेंकते पकता
समुद्र
और
फल

182, Jindaiji minami-cho, Chofu-shi, TOKYO

Scanned with CamScanner

एक बाँसुरी वाला

□ सुश्री एरिको किशिदा

बाँसुरी वाला अकेला है
लेकिन
बाँसुरी वाले की दस छायाएँ
जब
तुम बाँसुरी बजाते
तब
दस छायाएँ भी बाँसुरी बजाने लगतीं
दस छायाएँ बाँसुरी बजाना बन्द नहीं करतीं
इसलिए
ग्यारहवें बाँसुरी वाले, तुम बाँसुरी बन्द कर देते

रात अँधेरा छा जाता
तो दूर कहीं
रोशनी भरी छायाएँ बाँसुरी बजाने लगतीं
कभी पाल पर, कभी चींटी के बिल में
कभी पत्तों पर
हर एक छाया बाँसुरी बजाती
मानो कोई तुम्हारी स्वर-लिपि
इसलिए तुम्हारी याद आती
तुम हमेशा बाँसुरी बजाते थे

तुम्हारी खिड़की पर
दस खिड़कियाँ दूर तक बर्फ़ में जम गईं
जिन पर कभी हलकी बर्फ़ गिरती

Scanned with CamScanner

तो कभी न रुकनेवाली बारिश
फिर भी
तुम्हारी छायाएँ बाँसुरी बजाना नहीं रोकतीं
परेशान हो
तुम बाँसुरी वाली छायाओं को
सुलाने के लिए
बाँसुरी छीन लेते हो
और
तुम ग्यारहवीं छाया बन जाते हो।

5-9-4, Yanaka, Taito-ku, TOKYO

Scanned with CamScanner

स्त्री

□ सुश्री रिन् इशिगाकि

फिर भी उसे विश्वास था
युद्ध-समाप्ति के बाद भी।

सरकारी दफ्तर का
सरकारी निगम का
बैंक का
अपने देश का।

वह कोई
क्रूर मकान मालिक नहीं था
साहू भी न था
कोई धोखाधड़ी भी न थी
वह
सार्वजनिक कहलाने वाला
एक व्यक्तित्व था
उसी पर
मैं विश्वास रखती थी,

'मैं विश्वास करती थी'
इतना ही कहकर
खड़ी हो गई।
बस !
मूर्ख मैं ही थी।

1-1-1-307, Minamiyukigaya, Ota-ku, TOK YO

Scanned with CamScanner

सान्गात्सु दो

(मार्च मंदिर)

□ श्री तारो कितामुरा

मार्च का पहला दिन
हम गए मार्च मन्दिर
मार्च का पहला दिन
कभी कभी बर्फ़ पड़ती सुबह
बादलों के आवरण को हटा
नीला आकाश झाँकता है
कुछ चौंधियाता-सा
बर्फ़ पड़ रही थी
मार्च का पहला दिन
पत्नी के साथ
मार्च मन्दिर गए
तेन्प्यो-युगीन तेरह मूर्तियाँ
कामाकुरा, मुरोमाचि-युगीन तीन मूर्तियाँ
प्रकाश से भरे मंदिर में
सोलह मूर्तियाँ खड़ी थीं
(रात भर भी खड़ी रही होंगी)
मार्च का पहला दिन
मंदिर के छोटे-से कमरे में
मुझे सुनाई दी
सीत्कार
अगरबत्ती की सुगन्ध
(शायद रात भी फैल रही होगी)
मंदिर के दिशापाल अपने पद तल में
दुष्टों को दबाए खड़े थे

Scanned with CamScanner

उन्हें इसी तरह
हजारों साल से दबाया जाता रहा है
और अनन्तकाल तक दबाया जाता रहेगा
दबाए गए दुष्टों की आँखें
फैलकर निकल आई हैं
मार्च का पहला दिन
दोपहर होने को है
अगरबत्ती का धुआँ हिलता है
मैं शून्यपन से बाहर निकल आता हूँ
और सोचता हूँ
अगली बार आने पर
ये सोलह मूर्तियाँ
किस नज़र से देखी जाएँगी
मार्च का पहला दिन
'नमो, नमो'
मेरी पीठ मानो बर्फ़ का खम्भा
बादलों के बीच
नीला आकाश
बर्फ़ से घिरा
मार्च मंदिर

c/o Sakura-so, 10, Oshibadai, Naka-ku, Yukohama-shi

Scanned with CamScanner

चिचिबु कोन्मिन्तो

(चिचिबु जनवादी आन्दोलन)

□ श्री युताका आकितानि

जुलाई 1974 की सुबह
हालांकि वगीचे में Hydrangea का फूल
बारिश में भीग रहा है
पर आधुनिक युग बंजर है।
अखबार वाला अखबार बाँधकर फेंक जाता है
मगर अखबार के अक्षरों के बीच
अँधेरा ही भरा हुआ है।

मेइजि युग की वह सांस्कृतिक क्रांति
सोए हुए लोगों के लिए सूर्योदय थी
उसके बावजूद भी
मध्यकालीन युग का अँधेरा था
तोकोकु कितामुरा
केन्तारो ओओए
एमोरि उएकि
मुझे इन क्रांतिकारियों के नाम
स्मरण हो आते हैं
चांदनी रात में कोतोकु का प्रभाव चमकता है
पर जब चांद डूब जाता है
तो कवि की कविता भी अँधेरी हो जाती है।
मैं कोन्मिन्तो की कथा लिखना चाहता हूँ
सन् 1884 के नवम्बर की पहली तारीख
चिचिबु कोन्मिन्तो के हजारों गरीब किसानों ने

Scanned with CamScanner

आन्दोलन छेड़ दिया
पर कुछ ही दिनों में
यह क्रांति विफल हो जाती ।
नेता एइसुके ताशिरो को कुमागाया जेल में
मृत्यु दंड
नोगामि गाँव का नाएकिचि ओओनो
कोदामा जिले के कानाया गांव में
शहीद
कोन्मिन्तो के अधिकांश गरीब किसानों के बीच
सिर्फ देनज़ो इनोउए ही एक शिक्षित और गौर चेहरा था
क्रांति असफल
और वह लापता
और अन्त में होक्काइदो द्वीप के एक गाँव में
मर गया
आह
माँ की सुगंध जैसा
धूल से सने किसान के लिबास जैसा
गाँव
याद आता है
और याद दिलवाओ अपने आप को
सुदूर अपने गाँव की ओर से
उस घाटी से होकर आई
भयंकर पहाड़ों की आवाजों को
मेरे दोस्त ने कहा
वह केवल पहाड़ से मिट्टी सरकने की आवाज है
परन्तु
हमारे मन में Hydrangea का फूल
अब नहीं खिलता ।

3-2-10, Motomachi, Urawa-shi, Saitama-ken,

Scanned with CamScanner

आठ सिर-धारी साँप

□ साइजी माकिनो

जापान के 'इजुमो' राज्य के 'तोरिकामि' नामक स्थान पर एक आदमी अकेला आगे-आगे चल रहा था। कौन था, वह ! वह था, 'सुसानोओ' राजकुमार। चारों ओर कहीं भी इन्सान का घर दिखाई नहीं दे रहा था। लम्बा पेड़-घास फैलता निर्जन जंगल। नजदीक में कोई नदी बहती हो, क्योंकि कल-कल करती हुई आवाज सुनाई दे रही थी। काफी थके-मंदे राजकुमार कहीं आराम करना चाहता था और प्यास खूब लग रही थी कि कहीं पानी भी पी लें। वह पानी की आवाज सुनते हुए नदी के तट पर आ गया। जब वह पानी पीने वाला था, तभी उसने देखा कि 'हासि'(Chop-stick) (जिससे जापानी खाना खाते हैं) बहता आ रहा था। ख्याल आया कि कहीं कोई इन्सान है, जाकर देखूं ? वह नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ गया। कुछ दूर जाने के बाद उसने सामने एक घर देखा। उसने आवाज लगाई "नमस्कार"। पर निरुत्तर। एकाएक घर के भीतर रोने की आवाज सुनाई दी। "नमस्कार !" रोदन बंद हो गया और दरवाजा खुल गया। एक बूढ़ा बाहर आया। शायद वह अभी तक रो रहा था, क्योंकि आंखों के कोर लाल-लाल हो गए थे। आंसू की बूंद वृद्ध चेहरे की झुर्री पर लग रही थी। राजकुमार ने कहा "मैं यात्री हूं। तनिक विश्राम करना चाहता हूं।" बूढ़े ने उसको घर में बिठाया। देखा तो कमरे के कोने में एक लड़की रो रही थी। लड़की के कंधे पर हाथ लगाए हुए बुढ़िया मां भी रो रही थी। राजकुमार ने पूछा, "आप लोग क्यों रो रहे हैं ? बताइए, क्या बात है ? मैं यथासंभव आपकी सहायता कर सकूं ?" बूढ़े ने कहा, "धन्यवाद, पर आप कौन हैं ?" "मैं हूं 'सुसानोओनो' जो 'आमाते-रासु' देवी का छोटा भाई। अभी 'ताकामानोहारा' से ही उतर कर आया हूं।" बूढ़े ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और बोला "मुझे मालूम नहीं था कि आप इतने महान् हैं।" बूढ़े ने अपना परिचय देते हुए कहा, "सुनिए, आज रात को यह लड़की मारी जाएगी। पहले मेरे पास आठ लड़कियां थीं। हर वर्ष एक-एक करके मारी गईं, अब एक मात्र लड़की बच गई है जो आज रात को मारी जाने वाली है।" "कौन है, वह जो इतनी निर्दयतापूर्वक हत्या करता है ?" "वह मनुष्य नहीं, इस पहाड़ के उस पार पर रहने वाला आठ सिर धारी सांप है। एक धड़ पर आठ सिर और आठ पूंछ है जो दुनिया में अद्वितीय दुष्टात्मा है। उसकी बड़ी-बड़ी और लाल-लाल आँखें रत्न की भांति चमकती हैं और उसकी उग्र दृष्टि से समस्त जीव सिकुड़ जाता है।" बूढ़े का वर्णन बड़ा भयंकर था। "ठीक है; चाहे वह कितना भी भयंकर हो, कितना ही बदमाश हो, दुष्टात्मा की हम माफ

Scanned with CamScanner

नहीं कर सकते। मैं अवश्य उसे मार दूंगा। चिन्ता न करो।" बूढ़ा-बुढ़िया से सर्प-मारने की तैयारी करवाई गया। आठ दरवाजा बनवाया गया, जिसमें आठ मंच बनाया और उस पर एक-एक बड़ा घड़ा रखा गया। घड़ा तेज शराब से भरा हुआ था। "अच्छा, अब आप लोग कुछ दूर पर छिपे रहिए।" राजकुमार ने लड़की पर अपना श्वास फूंका तो लड़की एक कँघी बन गई। वह घर के पीछे से सर्प के आगमन की प्रतीक्षा करता रहा। एकाएक भू-गर्ज सुनाई दी, तब अचानक अंधेरा हो गया। देखा तो आकाश में काला बादल छाया हुआ है और बदबूदार हवा जोर से आने लगी। इसका मतलब अब आठ सिर वाला सांप आने ही वाला है। सांप के आने पर आठ घाटी और आठ पर्वत थे तथा पीठ पर चीर का पेड़ भी पनपता रहता था जिसके हिल जाने से भयंकर आवाज उत्पन्न होती थी।

साँप ने आठ दरवाजे से प्रवेश किया और मंच पर रखा हुआ शराब मजे से पी लिया। शराब बहुत तेज होने के कारण वह तुरन्त नशे में सो गया। यह देखकर राजकुमार ने अपने तलवार से उसका एक सिर काट डाला। बाकी सात सिर नशे से जाग्रत हुआ, पर प्रत्येक सिर प्रत्येक दरवाजे में घुसा हुआ था, इसलिए शोर मचाने पर भी वह घूम-फिर नहीं सका। एक के बाद एक सभी काटे गए और धड़ भी इसी प्रकार टुकड़ा-टुकड़ा कर दिया गया। अंत में जब वह पूँछ काटने लगा, तब किसी चीज से टकराकर आवाज और तलवार की धार टूट गयी। सावधानी से पूंछ को चीरने पर उसमें से एक चमकीला शानदार तलवार निकला। राजकुमार ने सोचा "इतना बहुमूल्य तलवार मेरे पास रखने योग्य नहीं, बहिन देवी को ही दे दिया जाए।" इस तलवार का नाम रखा गया 'आमेनोमुराकुमो' और बाद में 'ताकामागाहारा' की बहिन देवी के पास भेज दिया गया।

साँप को मारने के बाद राजकुमार ने अपने सिर पर रखी हुई कंघी को निकाल कर एक श्वास फूंक दिया। कंघी लुप्त हो गई और सुन्दर 'कुसिइनादा' देवी जैसा का तैसा सामने आ गई। वृद्ध दम्पत्ति बोले "आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी कृपा से ही हम सात लड़कियों का बदला ले सके।" राजकुमार का 'कुसिइनादा' देवी से विवाह हुआ और 'सुगा' नामक स्थान पर नया महल बना कर सुखपूर्वक रहने लगे।

Scanned with CamScanner

हमारे प्रकाशन

एशियाई आधुनिक साहित्य माला

भारत : 'अपना मोर्चा' काशीनाथ सिंह
अनुवादक : शिगेओ आराकि

'आधुनिक हिन्दी साहित्य'
योशिआकि सुजुकि
डॉ० शम्भुनाथ, डॉ० प्रेमशंकर
डॉ० आनंद दीक्षित, श्रीमती मृणाल पाण्डे,
श्री शैलेन्द्र चौहान, डॉ० गंगाप्रसाद विमल
श्री रघुवीर सहाय

इन्दोनेशिया : 'अनन्त रास्ता' मोताफल लुविस
अनुवादक : नोरिआकि ओशिकावा

ताइवान : 'सायोनारा फिर मिलेंगे' ह्वान चुन मिन
अनुवादक : तानाका व फुकुदा

मनिला : 'चमकता नाखुन' एडगर्ड लैएस
अनुवादक : मोतोए तेरामि

एशियाई आधुनिक साहित्य का अनुवाद एवं प्रकाशन

MEKONG Co., LTD

12-4, Hongo 2-Chome, Bunyko-ku, TOKYO, JAPAN

Scanned with CamScanner

इस अंक के लेखक एवं लेखिकाएं

श्री योशिआकि सुजुकि (सम्पादक)	3-6-3-415, Kiba, Koto-ku, TOKYO, JAPAN
श्री शिगेओ आराकि	249-7 Momura, Inagi-shi TOKYO
श्री हिदेहिसा हिरानो	4-11-9, Kugayama, Suginami-ku ,TOKYO
सुश्री रिन् इशिगाकि	1-1-1-307, Minamiyukigaya, ota-ku, TOKYO
श्री युताका आकितानि	3-2-10, Motomachi, Urawa-shi, Saitama-ken.
सुश्री एरिको किशिदा	5-9-4, Yanaka, Taito-ku, TOKYO
श्री तारो कितामुरा	C/o Sakura-so, 10, Oshibadai, Naka-ku, Yokohama-shi, Kanagawa-ken
श्री नोबुओ आयुकावा	4-38-16, Tamagawa, Setagaya-ku TOKYO
श्री माकोतो ओओओका	182, Jindaijiminamicho, Chofu-shi, TOKYO
श्री आकितो सुगितानि	699-4, Santanda, Hanagashima-cho, Miyazaki-shi, Miyazaki- ken
सुश्री फुमिको इतागुचि	Mıfukuro, Soja-shi, okayama-ken, Japan
श्री साइजी माकिनो	11, Andrews Palli, Santiniketan, West Bengal

विशेष सहयोगी

श्री कैलाश चन्द्र पाँडे, बाई-81 हौज खास, नई दिल्ली

श्री हेमचन्द्र पाँडे

Scanned with CamScanner